

प्रकाशक:—

भूरसिंह निर्वाण

७ ए, सिविल लाइन्स,

बीकानेर (राजस्थान)





प्रथम संस्करण:—

गणतन्त्र दिवस,

२६ जनवरी, १६७२



मूल्य ७ रुपये ५० पैसे



मुद्रक.–दी यूनाइटेड प्रिन्टर्स एण्ड कम्पनी

राधा दामोदर जी की गली,

चौडा रास्ता, जयपुर–३ (राज०)



"सायरन और सजगता" के प्राप्ति-स्थान:—

१. प्रमुख विक्रेता:–नवयुग ग्रन्थ कुटीर, कोट-गेट, बीकानेर (राज०)

२. अन्य विक्रेता.–मुक्ति प्रकाशन, बीकानेर (राज०)

चिन्मय प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३ (राज०)

दी स्टूडेन्ट्स बुक कम्पनी, सोजती गेट,

जोधपुर (राज०)





[१]

स्वतन्त्र भारत

के

रजत-जयन्ती वर्ष,

[२]

भारत-पाक सघर्ष

में

भारतीय सेनाओं की अनुपम विजय,

[३]

बगला मुक्ति-आन्दोलन

और

मुक्त बगला देश

[४]

बंग-बन्धु शेख मुजीबुर्रहमान के स्वतन्त्र बगला देश के

प्रधान-मत्री पद सभालने,

एवं

[५]

श्रीमती इन्दिरा गान्धी, प्रधान मत्री, भारत सरकार

को

"भारत-रत्न" की उपाधि से विभूषित किये जाने—

की

स्मृति में

"सायरन और सजगता"

प्रकाशित

गणतन्त्र दिवस, २६ जनवरी, १९७२









संदेश

शिक्षा मंत्री,
राजस्थान सरकार।

[१]

जयपुर,
राजस्थान।
१० दिसम्बर, १६७१

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि इस सकटकालीन परिस्थिति में जब कि हमारे जवान मोर्चो पर देश की रक्षा मे जुटे हुए है एव जनता नागरिक सुरक्षा के कार्यो मे सलग्न है, श्री भूरसिह जी निर्वाण द्वारा रचित "सायरन और सजगता" नामक काव्य पुस्तिका (३३ कविताओ का स्वरचित सग्रह) का प्रकाशन, जनता और जवानो के मनोबल को प्रबल रखने के लिये एक वहुत ही सराहनीय कदम है।

राजस्थान सर्वदा वीरों की भूमि रही है और हमारे वीरो की शौर्य-गाथाये हमें प्रेरणा देती रही है।

मै श्री निर्वाण को इस प्रकाशन पर बधाई देता हूँ।

पूनम चन्द विश्नोई
शिक्षा मंत्री,
राजस्थान, जयपुर।

—०—

[२]

श्री भूरसिह निर्वाण की कविताये मैंने पढी हैं। उनको कविताओ मे राष्ट्रीयता एव ओजस्विता कूट-कूट कर भरी हुई है। मैं आशा करता हूँ कि उनकी यह पुस्तक "सायरन और सजगता" भारतीय नागरिको मे जागरण एव वीरता का नव-सदेश देगी।

दिनाक, १७ नवम्वर, ७१

जी० रामचन्द्र
जिलाधीश, बीकानेर





॥ श्री ॥

राजस्थान का सुप्रसिद्ध

हिन्दी विश्वभारती शोध संस्थान, बीकानेर

निर्देशक बीकानेर

विद्यावाचस्पति, मनीषी, दिनाक २२-११-७१

विद्याधर शास्त्री, एम० ए०

साहित्यकार श्री भूरसिह जी निर्वाण का प्रत्येक वाक्य जीवन की गहन अनुभूति और स्वाभाविक सत्प्रेरणा के स्रोत से सम्पन्न होता है। आप राष्ट्र की प्रत्येक गति विधि के मौलिक कारणो के अन्वेषकार और प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्ट विचारधारा के सहज परीक्षक है। इन विशेषताओ के अतिरिक्त आपकी सबसे अधिक स्वागतार्ह विशेषता यह है कि आप देशकालानुसार राष्ट्रमानस में अपेक्षित नव स्फूर्ति और शक्ति के संचार की अपूर्व क्षमता रखते हैं। "धधकती आग," "दृढ प्रतिज्ञ मुजीब," "याह्या को हिदायत", 'रणककरण', "बोलकवि", "कौन चकनाचूर होता", और 'लाल बहादुर शास्त्री', प्रभृति आपकी कविताओं के पाञ्चजन्य से उद्घोषित- 'सायरन और सजगता' नाम से प्रस्तुत, आप के इस अर्वाचीनतम कविता प्रकाशन की प्रत्येक कविता आपकी इस सहज प्रेरक शक्ति को उद्भासित करती है। राष्ट्र की वर्तमान स्थिति ने आपके इस काव्य को और भी अधिक शक्तिसम्पन्न कर दिया है। मिथ्या प्रशसा अथवा अनावश्यक अलकरण की अपेक्षा आप अपने कथ्य को सहजगम्य, सीधे शब्दो मे अभिव्यक्त करते हैं और आप का व्यग तीखा होकर भी असह्य नही होता और सदा एक नये कर्तव्यबोध का जनक होता है। मैं आप की शृंखलाबद्ध भावलहरी और आपकी प्रत्येक बात पर एक नये विचाराकुर को विभावित करने वाली तुकस्रक् (माला) से सदैव प्रभावित होता रहा हूँ। मेरा दृढ विश्वास है कि आप के इस "सायरन" से राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में सजगता उत्पन्न होगी और वह अपने कर्त्तव्य पालन की दिशा मे अग्रसर होगा।

विद्याधर शास्त्री





ठा० श्री भूरसिह जी निर्वाण का कविता संग्रह **'सायरन श्रौर सजगता'** मैने ध्यान से पढी। इस से पहिले उन के मुख से इन मे से कई कविताऐ मै सुन चुका हूँ श्रौर उनका श्रानन्द ले चुका हूँ। मैने यह श्रनुभव किया है कि उनकी कविताश्रों मे श्रनोखी सूझबूझ रहती है श्रौर शब्द-चयन की विशेषता रहती है। उनकी शब्द-योजना बड़ी सुन्दर है। ये कविताऐ देश भक्ति पूर्ण है श्रौर भारत की स्वाधीनता की रजत जयन्ती वर्ष मे प्रकाशित की जा रही है।

इन मे से बहुतसी कविताऐ तो राजस्थान के श्रनेक समाचार पत्रो मे प्रकाशित हो चुकी है। इन की कविताऐ:—

(१) राष्ट्र के नौनिहाल के प्रति (२) याहया खां को हिदायत (३) राष्ट्र निष्ठा (४) उद्‌बोधन एवं ५) रणकंकण, मुझ को बहुत श्रच्छी लगी श्रौर मुझे श्राशा है कि श्रन्य पाठको को भी श्रच्छी लगेगी। वेसे कत्रिताऐ तो इस सकलन की सभी श्रच्छी है या यो कहिये की एक से एक बढकर है।

यह भाव कितना सुन्दर है:–

"चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहे।
मेरा भारत रहे, श्राजादी रहे॥"

देश भक्ति के भाव इस से श्रधिक क्या सुन्दर हो सकते है?

ठा० श्री भूरसिह जी का हृदय सदा से ही देश-प्रेम से श्रोत प्रोत रहा है। हृदय मे जैसे भाव होते है, वे ही कविता-रूप मे प्रगट होते है। इनकी कविताश्रो की यदि मै प्रशसा करने लगू तो यह केवल सम्मति नही रहेगी।

(ठा०) रामसिह एम०ए०
भू०पू० डाईरेक्टर, शिक्षा विभाग, राजस्थान
श्रध्यक्ष,
सार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्सटीट्यूट,
बीकानेर

पचवटी,
मेजर पूरण सिंह मार्ग,
बीकानेर (राजस्थान)
२२–११–७१





श्री भूरसिह निर्वाण की कृति **"सायरन और सजगता"** को आद्योपात पढने का सुअवसर प्राप्त हुआ। रचनाए सामयिक संदर्भो से युक्त एव राष्ट्रीय भावनाओ से ओतप्रोत है।

आज देश को जिन विकट समस्याओ का सामना करना पड रहा है, कवि उनके प्रति पूर्णतया सजग है। नागरिको को राष्ट्र के प्रति निष्ठावान बनाने तथा उनके मनोबल को उन्मन करने का दोहरा दायित्व लेकर कवि ने **"सायरन"** के माध्यम से जागरण का मत्र फूकने का प्रयास किया है।

भाषा सहज, सुग्राह्य एव प्रवाहमय है। सप्रेषण की समस्या कही भी नही आती। शिल्प की दृष्टि से भी काव्य शिथिल नही है– उचित कसावट एव मार्मिक शब्द-चयन से सकलन की कविताओ मे अधिक रोचकता आ गई है।

श्री भूरसिह सोद्देश्य लेखन के पक्षधर है। अत इनका मंतव्य श्रोताओ अथवा पाठको को निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर लेजाना रहता है। मात्र आनद की अनुभूति करवाने अथवा अभाव अभियोगों एवं निराशा जन्य कुण्ठाओ को उजागर करने का प्रयास इनके काव्य मे नही मिलता। वे आशावादी हैं और किसी लाइट हाउस की तरह भटके हुए जहाजो को नई दिशा देते प्रतीत होते है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में ऐसे ओजस्वी स्वरो वाले कवि की रचनाओ का सर्वत्र स्वागत होगा—ऐसी आशा की जा सकती है।

वीकानेर,
दिनाक, २३-११-७१

भवानी शंकर व्यास
"विनोद"





[४]

श्री भूरसिह जी निर्वाण की कविता सग्रह का नाम **"सायरन और सजगता"** सुन्दर है। इसके मुख पृष्ठ पर सीमा एव नागरिक सुरक्षा के साधनों का समन्वय और उनका सजग दिखाया जाना प्रभावोत्पादक है। कवि का स्वय का वक्तव्य तर्कसंगत होने से उत्साह-वर्धक एवं प्रेरणादायक है। कविताओ के शीर्षक उपयुक्त तथा सारगर्भित हैं। लगभग सभी रचनाए समयानुकूल, मर्मस्पर्शी एवं लक्ष्य भेदी है। भाषा सरल होने के कारण कवि की राष्ट्र-प्रेम की भावनाए साधारण जनता तक आसानी से पहुँचने वाली है। हास्यका पुट होने से कुछ कविताए रोचक हो गई है एव उपयुक्त स्थानो पर ऐतिहासिक तथ्यो का समावेश किये जाने से कविताओं मे निखार आ गया है।

संघर्षमय जीवन में कवि आशावादी है और यही सन्देश जनता तक पहुँचाना उनका उद्देश्य है।

आपका प्रयास प्रशसनीय है। सफलता के लिए मेरी शुभकामनाए आपके साथ है।

बीकानेर,
दिनाक. २५-११-७१ इ०

डा० (कुमारी) पद्मजा शर्मा
"लैकचरार," इतिहास विभाग
डूंगर कालेज, बीकानेर।





मेघराज मुकुल,
शासन उप-सचिव

जयपुर (राजस्थान)
दिनाक, ९ दिसम्बर, १९७१

राजस्थान के प्रसिद्ध कवि श्री भूरसिह जी निर्वाण द्वारा लिखित काव्य "**सायरन श्रौर सजगता**" देखने को मिली। जैसा कि पुस्तक के नाम से स्पष्ट है, इस में देश भक्ति से ओतप्रोत कविताये तो है ही, वर्तमान सकट कालीन प्रसग मे भी, इस पुस्तक मे सम्मिलित ऐसी जोशीली कविताऐ हैं, जो सभी स्तर के पाठको मे सजगता की प्रेरणा फूक सकेंगी।

श्री भूरसिह जी निर्वाण राजस्थान के जाने माने प्रौढ कवि है श्रौर उनकी कविताओ से हृदय की सच्ची भावनाश्रो का उद्रेक होता है। "सायरन श्रौर सजगता" पुस्तक में सम्मिलित इन रचनाओ मे ओजपूर्ण किन्तु सरल भाषा का समावेश किया गया है ताकि उनकी सहज अभिव्यक्ति को पाठक बिना परिश्रम के ग्रहण कर सके। कही कही पर चुटीले व्यग हसी का फव्वारा छोड़ते जाते है, जिस से साहित्यिक मनोरजन भी पर्याप्त मात्रा में होता है।

मुझे आशा है कि श्री निर्वाण ऐसी ही श्रौर अधिक काव्य रचनाये दकर, जन–साधारण को देश-भक्ति के लिये प्रेरित करते रहेगे।

मेघराज मुकुल
९–१२–७१





पिछले तीस वर्षो से मैं श्री भूरसिहजी निर्वाण की काव्य रचना से परिचित हूँ और कई बड़े बडे रगमचो पर उन्हे अन्य प्रमुख कवियो के साथ निरन्तर सुनता रहा हूँ। काव्य-पाठ करते समय श्री भूरसिहजी कविता की भावनाओ के साथ एकाकार हो जाते है और वीररस के काव्य-पाठ के समय तो ऐसा लगता है कि जैसे कोई जुझार युद्ध के मैदान मे जूझ रहा हो।

हिन्दी कविता मे पिछले दो दशको में कई नए तूफान आए है और नए प्रयोगो के नाम पर काव्य की शास्त्रीय परम्पराओ को जैसे भुला ही दिया गया है। ऐसे समय मे श्री भूरसिहजी निर्वाण जैसे थोड़े कवि ही है कि जो भारतेन्दु काल से चली आने वाली काव्य-परम्पराओ को अपने सृजन मे ज्यों का त्यो सुरक्षित रखा है।

यह प्रसन्नता की बात है कि स्वतन्त्र भारत को रजत-जयती के वर्ष मे 'सायरन और सजगता' के नाम से श्री भूरसिह जी की ३३ कविताओ का सकलन प्रकाशित हो रहा है। इस संकलन में इनकी अधिकाश राष्ट्रीय कविताओ का समावेश है। लेकिन श्री भूरसिहजी तो सभी रसो मे पूरे अधिकार से लिखते रहे है, अतः इस सकलन मे ही उनके द्वारा सृजित करीब-करीब सभी रसो का थोड़ा बहुत रसास्वादन पाठको को हो ही जायगा। फिर भी इस सकलन मे उनकी 'राष्ट्र निष्ठा', 'रणककण', 'उद्‌वोधन', 'तूफान' और संघर्ष तथा 'किसकी कुर्सी' आदि कविताये निश्चय ही लोकप्रिय होगी

प्रकाशन के लिए भूरसिहजी की यह पहली काव्य कृति है। उनके सृजित काव्य के प्रकाशन का यह क्रम निरन्तर आगे वढ़े और उनके कार्य का समाज में समुचित मूल्यॉंकन हो तथा समाज उनके कार्य को समुचित मान्यता देगा, यही कामना है।

सुमनेश जोशी

जयपुर दिनाक १४-१२-७१

भूरसिघ निरवाण री, कविता भाव विभोर।
सम्मत्ति सवाई के देवै ? काव्य काळजै कोर।।

जयपुर, —सेखावत सवाई सिंघ घमोरा

१५ जनवरी, १९७२ ई०





प्रस्तावना

विष्णुदत्त शर्मा, सदस्य, अजमेर (राजस्थान)
पब्लिक सर्विस कमीशन,
(राजस्थान)

श्री भूरसिंह जी "निर्वाण" की यह छोटी सी काव्य पुस्तिका "सायरन और सजगता" देश की सजग आत्मा के प्रति उनकी श्रद्धांजलि है।

सन् ७१-७२ के वर्ष को उन्होने स्वतन्त्रता की "**रजत जयन्ती**" का वर्ष कहा है। यह रजत-जयन्तो "**फौलाद-जयन्ती**" के रूप में मन रही है। वीर-देश के लिए यह उपयुक्त ही है।

"सायरन और सजगता" वक्त की आवाज है-युग का स्वर है। स्वतन्त्रता की देवी बलिदान मागती है-उसके उपासक बलिदान देने मे एक दूसरे से होड़ लगाते है। उन्ही बलिदानियो के सम्मान मे श्री निर्वाण ने अपनी यह काव्य-मालिका गूंथी, है, जिस मे परम्परागत मान्यताओ के अनुसार काव्य-कला चाहे उतनी न हो, पर वीर-दर्प से भरे हुए और उद्बुद्ध चेतना पूर्ण हृदय की वाणी है।

राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण ने कहा था :—

"जय देवमदिर देहरी,
सम-भाव से जिस पर चढी
नृप हेम-मुद्रा और रकं कपर्दिका"

गुलाब और वेले के फूल विलास मंदिरो की शोभा बढाते है पर रण के देवता प्रलयकर शकर पर काटेदार धत्तूर के पुष्प चढते हैं वैसे ही निर्वाणजो की यह कविता मातृ-मदिर मे पूजा के रूप मे स्वीकार होगी-ऐसी मेरी आशा है।

विष्णुदत्त शर्मा

अजमेर,
ता: ५-१२-७१





प्राक्कथन

"सायरन और सजगता" श्री भूरसिह निर्वाण की काव्य कृति है श्री निर्वाण जी की कविताएं मै अपने बचपन से सुन रहा हूँ।

श्री निर्वाण का व्यक्तित्व शुद्ध भावना से ओत-प्रोत व्यक्तित्व है अतः उनकी कविता मे सीधा वह व्यक्त होता है जो भावनात्मक प्रतिक्रिया के आधार बनाता है। उनकी कविता मे बौद्धिक विलास को कोई स्थान नही है। जगह जगह साधारण आदमी के मुहावरे में चुटीला व्यंग्य भी इन कविताओं का अपना विशेष गुण है। आज जब कविगण आस्था और अनास्था के वीच किसी अनवस्था से उवरने की कोशिश में लगे है, ५८ वर्ष से ऊपर उम्र प्राप्त श्री निर्वाण अदम्य साहस और वीरता के गीत उसी सहज भाषा में गा लेते हैं, यह कम नहीं है। "देश के नौनिहालो के प्रति" कविता हमारी नौजवान पीढी के लिए अत्यंत प्रेरणास्पद है।

श्री निर्वाण हमारे प्रान्त के सर्व श्री उस्ताद, सुमनेश जोशी, गणपतिचन्द्र भण्डारी आदि के समय के कवि है। वे उस समय भी सहज और मोहक होकर अपना कविता पाठ उसी जोश और साहस से करते थे जैसा आज करते है। सच तो यह है कि श्री निर्वाण शुद्ध रूप से हृदय ही हृदय हैं।

जहां हिन्दी की कविता कई वादो के घेरे में घूमती रही है, श्री निर्वाण ने अपनी कविता को अपने हृदय और सीधेसादे अनुभवो और व्यंग्यो से वाहर नही जाने दिया है।

राजस्थान से श्री निर्वाण को असीम मोह है। उनके 'ठूंठों वाले देश" में यही, मोह व्यक्त हुआ है। मरू प्रदेश के वीच खड़े ठूंठों से मरू प्रदेश का स्वरूप हृदयंगम कर श्री निर्वाण ने रचना की है, यह आज भी सच है। मै श्री भूरसिंहजी निर्वाण के काव्य सग्रह "सायरन और सजगता" की सफलता की कामना करते हुए आशा करता हूँ कि जनता इस सग्रह का हृदय से आदर करेगी।

जयपुर,

दिनाक १५-१२-७१

तारा प्रकाश जोशी





आमुख

श्री भूरसिह निर्वाण राजस्थान के जाने माने लोकप्रिय कवि है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र मे ये सन् १९४२-४३ से सक्रिय हैं। जब जोधपुर मे हिन्दी-प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई तब से श्री निर्वाण उक्त सभा के सस्थापको मे प्रमुख तथा कार्यकारिणी के कर्मठ सदस्य रहे है। आपकी हिन्दी काव्य मे रुचि लगभग १९३७ से जब रतनगढ मिडिल स्कूल मे प्रधानाध्यापक थे, तब से ही रही है और आपकी रचनाओ का प्रकाशन अनेक पत्र-पत्रिकाओ मे होता रहा है। आपका नाम राजस्थान के प्रसिद्ध कवियो की श्रृंखला मे जुडा हुआ है एव सेवा निवृत्त होने पर भी काव्य-सेवा मे रत रह कर निरन्तर साहित्य सेवा करते आ रहे है। प्रस्तुत पुस्तक इनकी काव्य कृतियो का प्रथम सग्रह है। शासन सचिवालय, जोधपुर एव शासन सचिवालय, राजस्थान, जयपुर मे ये हमारे अनन्यतम मित्र एव सहयोगी रहे हैं, अत इनकी रचनाओ की विवेचना करना अतिशयोक्ति पूर्ण उक्ति हो सकती है, जिसे जानते हुए भी इनकी रचनाओ का परिचय पाठको से करा देने का लोभ सवरण नही कर पा रहे है।

आज के इस वैज्ञानिक युग मे जहाँ पर जीवन की हर अनुभूति को भौतिकवाद की कसौटियो पर परखने की जो अधी परम्परा चली है, वहाँ जीवन क्षेत्र की प्रतिक्षण वदलती हुई, मनोदशा मे भी कवि ने "व्यापक प्रार्थना स्थल" मे जीवन यापन की कठिनाइयो की घड़ियो मे "कि प्रार्थना निर्वाण जभी चाहे जहां करले" की कडियो को जव गुन गुनाया जाता है तो मन की सुपुप्त तन्त्री झनझना उठती है। कवि के अन्तस्तल में उनके व्यापक प्रार्थना स्थल मे दीन दुखियो की आहों से लेकर राजघराने मे, मन मन्दिर मे वर कर लेने व जहां भी जी चाहे वही प्रार्थना करने का उद्घोष नास्तिक को भी आस्तिकता की ओर वढाने का आह्वान है।





श्री भूरसिंह निर्वाण सदैव से ही सूझ-बूझ, चतुराई, मेल-मिलाप एव सौहार्द्र के वातावरण मे रहे है और अपनी सूझ-बूझ का दिग्दर्शन इनकी कविताओ मे प्रस्फुटित हुआ है। जब भारत पर युद्ध के बादल मडरा रहे थे, दुनियां को आने वाले दुर्दिनों का तनिक भी आभास नही था, उस समय इनके हृदय मे जो आग धधकी थी वह "धधकती आग" कितनी सत्य सिद्ध हुई है—यह सच्चे हृदय से निकले भावों का सच्चा प्रतिबिम्ब है।

श्री निर्वाण ने अपनी कृतियो मे ऐसा कोई स्थल अछूता नही छोड़ा है, जिस पर उनकी लेखनी कुंठित हुई हो। सायरन बजने पर सजगता आती है, अत नौजवानो को सावधान करने के साथ-साथ बगला मुक्तिवाहिनी की जय-जयकार से लेकर सभी सेनाओ की तथा सेनाओ को प्रेरणा-दायिनी **"भारत–रत्न"** इन्दिरा गाँधी की जय-जयकार के साथ-साथ जनता की जय-जयकार से कविताओ का समारम्भ इनकी कृति मे एक नवीनता है। बापू के व्यक्तित्व को दर्शाते हुए उसकी रामायण का पाठ कराते हुए पुरानी व नई पीढ़ी को अपने कर्त्तव्य की याद दिलाना भी वे नही भूले है।

आज की सामयिक परिस्थितियों पर अंकुश रखते हुए, शेख मुजीब की आत्मा की पुकार के साथ-साथ "धमकी का जवाब" उनकी कल्पना को कितना ऊँचा उठाता है—यह कविताओं के मनन करने पर एक नई प्रेरणा देने वाला स्थल है।

सुप्त जनता को जागरण की प्रेरणा देते हुए कवि भारत के नौजवानो को युग-प्रहरी बन कर आजादी की रक्षा के लिए सावधान करते हुए मातृ भूमि की रक्षा मे रण कंकण को सफल बनाने तथा भारत वीरो को सगीनो की नोंकों पर नव-भारत इतिहास बनाने की उद्घोषणा करते हुए सकट की घड़ियों मे भी आदर्शो की आन को निभाने पर बल देना नही भूले है। कही भारत के लाडले नौजवान अपना धैर्य न खो बैठे, इसके लिए श्री निर्वाण ने जीवन मे सघर्ष के साथ-साथ आशावादी बनकर रहने की प्रेरणा भी दी है। राष्ट्र-निष्ठा से कोई च्युत न हो इसलिए उनका यह कथन कि —





"चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजादी रहे"

बडा ही प्रेरणादायक बन पड़ा है ।

श्री निर्वाण न केवल साहित्यिक ही है, अपितु सेवा निवृत्ति के बाद अनेक प्रवृत्तियों के प्रेरक बन कर अपने अनुभवों को अपनी कविताओ मे स्थान देना नही भूले हैं और "सौ बातो की एक बात" में दम्पत्ति अध्यादेश निकलवाने को आज भी बडे ही आतुर है ।

उनकी भाषा चुस्त चलती हुई हिन्दी है, जिसमे कृत्रिमता के लिए स्थान नही है । भाषा की सफलता उनकी कविताओ को अधिक हृदयंगम् एव आकर्षक बना देती है । अलकारो और मुहावरों का यत्र-तत्र आवश्यकतानुसार स्वाभाविक रूप से समावेश किया गया है । गाँधीजी के लिए "सूरज" और देशवासियो के लिए 'सूरज-मुखी' की उपमा कितनी यथार्थ और उपयुक्त है —

एक सूरज
और
करोड़ों सूरजमुखी
जिधर घूमता था
उधर ही घूम जाते थे

कृषक की सफलता का रहस्य समय पर बीज बो देना है । "वक्त के बोये मोती उपजते हैं–" कृषको मे प्रचलित यह लोकोक्ति श्रीमती इन्दिरा गांधी पर कितनी सुन्दरता, से घटित होती है यह सामयिक घटनाओ की जानकारी रखने वाले सभी जानते हैं । बगला देश को मान्यता देने के प्रश्न पर सरकार की ओर से बराबर यही कहा जाता रहा कि समय आने पर मान्यता दे दी जायगी । यह सभी जानते है कि किस उपयुक्त समय पर मान्यता दी गई और उसके कितने सुन्दर परिणाम सामने आये ।

श्री निर्वाण लिखते हैं—

"राजनीति मे नीति निपुण तू, मोती की तू पोती है
वक्त बुहाई कर देती है, उपजे माणक मोती है"





राजस्थान की धोरों की धरती में, जहा पग पग पर प्रकृति के साथ संघर्षमय जीवन व्यतीत करना पड़ता है—उस जीवन का दिग्दर्शन "ठूठो वाले देश" नामक कविता मे कराया गया है। कही राजस्थानी वीर शहरी वातावरण में अपने मूल को न भूल बैठें, इसीलिए पृथ्वी पाताल हिलाकर शोणित से खेले जाने वाले फाग की याद दिलाकर प्राणों को हथेली पर रखकर दुनियाँ को अपनी वीरता दिखाने के लिए प्रोत्साहन देना कवि नही भूलते है। इस कृति को जब आसाम, बगाल अथवा हिमालय की तराई मे रहने वाले व्यक्ति पढेगे, तब वे अपने को मरु-प्रदेश में विचरण करते हुए अनुभव करेंगे।

इस कृति का एक उदाहरण प्रस्तुत है:—

"तूफानी कुटिल कुचालो में,
ओले — पाले भूचालों में,
फिर भी यह ठूंठ अटूट रहे,
है इनकी जड़ पातालों मे,
कीली ज्यो मस्तक शेषनाग,
हे ठूठो वाले देश जाग"

प्रस्तुत सग्रह मे देश प्रेम और जागृति से ओत प्रोत कृतियों की बानगी देखते ही बनती है:—

× × ×

जां निसारी जानते हैं, सर हथेली पर लिए।
मै वतन के वास्ते हूं, यह वतन मेरे लिए॥

× × ×

आजादी की लहर बम्मो से कभी रुकती नहीं।
जो भभकती आग है वह आग से बुझती नही॥

× × ×





देश-प्रेम के दीवाने बन, देश जाति पर बलि हो जाओ।
मातृ-भूमि के परवाने बन, निज प्राणों की भेंट चढ़ाओ।।

× × ×

समाजवाद और समानता का सुहावना स्वप्न कवि के शब्दो मे किस प्रकार साकार होकर उभरता है, देखिये :—

नहीं शिकायत रहे किसी की,
हमे मिले पूरी हाला।
साकी वह भरपूर पिलाकर,
करे प्रेम से मतवाला।
दीन धनी हिन्दू—मुस्लिम सब,
बन प्रेमी पीवे प्याला।
उन्नति करती बनी रहे,
आजाद हिन्द की मधुशाला।

पाकिस्तान की आक्यूपेशन आर्मी के परिपेक्ष्य में बंगला देश की आवाज़ कवि से पूछती है—

"किसकी कुर्सी काबिज कौन ?
बोल कवि! क्यों साधे मौन!"

इसका सीधा साधा उत्तर कवि ने किस रोचक ढंग से निम्न-लिखित पंक्तियो में दिया है:—

"जब टाइम आयेगा तेरा
बजे जीत का डंका तेरा
तभी बधेगा तेरे सेहरा
भूमि होगी, डेरा तेरा
तभी बदलना अपना टोन
सोच समझ कवि रहता मौन।"

कवि ने संघर्षमय वातावरण मे जहा "तूफान और संघर्ष" के गीत गाये हैं वहाँ "राष्ट्र के प्रति निष्ठा", "अनुभूतिया", "जीवन दीप", "भारतीय नारी के प्रति" अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए



राष्ट्र के नौनिहालों को जो जागृति का सदेश दिया है वह अंधकार मे प्रकाश स्तम्भ के समान है। "इतिहास बोलता है", "ईंट का जवाब पत्थर", "प्यारी कहानी" आदि रचनाएं तो मुंह बोलती हुई तस्वीरे है।

जन जीवन मे मनुष्य चाहे कितना ही व्यस्त रहे, किन्तु कुछ क्षरण ऐसे भी आते है, जब सब कुछ भूल कर वह अपने मन मे शाति अनुभव करता है, उस क्षरण की प्रेरणा एव मन में गुदगुदी उत्पन्न करने के लिए कवि ने अपनी कविताओ मे हास्य रस को प्रस्फुटित कर अपने हृदय की एक और कड़ी जोड़ी है, जो पुस्तक के कलेवर को एक नया रूप दे रही है। "कलदार के चमत्कार" से कौन चमत्कृत नही है। "शायरो पर शेर" लिखते हुए जहाँ काका की दाढ़ी को यू एन. ओ के सग्रहालय मे रखने का सुझाव दिया है, वहाँ कवि अपने साफे को अपने "प्यारे वेश" में सटकाया जाना भी नही भूले है।

श्री भूरसिह जी अपने स्वास्थ्य का ध्यान न रखते हुए भी हम लोगो को अपने प्रेरणा रूपी सायरन बजाते हुए संपादन के लिए सजग करते रहे है, वह इस साहित्यिक कृति **'सायरन और सजगता'** की एक नई सजगता रही है। इसके लिए हम उन्हे किन शब्दो मे धन्यवाद दे?

अंत मे हम श्री ताराचन्द जी वर्मा को धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझते है, जिन्होने अपने व्यस्त कार्यक्रमों मे सजग रह कर सायरन की आवाज को सजग रखा है।

यद्यपि पुस्तक के प्रूफों में सावधानी वरती गई है, फिर भी यदि कोई सामान्य त्रुटि रह गई हो तो पाठक गरण उसे शुद्ध करके पढ़ने की कृपा करेगे।

वसन्त पंचमी,
२१ जनवरी, १६७२
जयपुर (राजस्थान)

अम्बालाल कल्ला
दयानन्द सारस्वत
शिव प्रताप पाण्डे





स्वयं को ओर से

"सायरन" तो 15 अगस्त, 1947, जिस दिन भारत स्वतन्त्र हुआ, उसी दिन से बजने प्रारम्भ हो गये और चूंकि इस स्वतन्त्र राष्ट्र के नौजवानो ने भारत की स्वतन्त्रता की रक्षा करने की शपथ ली है, इसलिये भारत हमेशा सजग और सतर्क रहता ही रहेगा।

स्मरणीय रहे कि पोलो के खेल के घोडो को प्रतिदिन मैदान मे दौड़ा कर उतना ही व्यायाम कराया जाता है, जितना वास्तविक खेल मे हुआ करता है, चाहे पोलो का खेल साल में एक बार ही खेला जाय।

भारत को "सोने की चिडिया" कहा गया है। वास्तव में मेरा देश, जिस देश की मिट्टी मोना उगलती है, हीरे मोती उगलती है, अवश्य ही सोने की चिड़िया है। इसीलिये तो विश्व के कुछ राष्ट्र अपने आर्थिक एव राजनैतिक लाभ के लिये, अवसर की तलाश मे इस देश की तरफ ताक लगाये रहते है। यह कोई नई बात नही है:—

"Serpents hiss where there is green"

"जहाँ हरियाली होती है, वहाँ सांप फुसफुसाया ही करते है।"

सन् 1971-72 का वर्ष

(1) भारतीय जनतन्त्र के चुनावों मे अद्वितीय सफलता, (2) गरीबी मिटाने एव समाजवाद लाने का सकल्प, (3) स्वतन्त्र भारत का 25 वां अर्थात् रजत-जयन्ती वर्ष, (4) पूर्वी बगाल में चुनाव के दगल में जनता की अभूतपूर्व विजय, (5) शेख मुजीबु-र्रहमान की चुनावो मे भारी बहुमत से जीत और जनतन्त्र को दफनाने





पुट दिया गया है तथा कुछ समय की पुकार के साथ लिखी गई है। आवश्यकतानुसार कुछ कविताए छोटी भी कर दी गई है।

साहित्यिक, कवि एव विद्वान पाठकगण ही "कवि" के लिये दर्पण प्रस्तुत करते है, जिसमे कवि अपनी कविताओ की भावनाओ का प्रतिबिम्ब देख सकता है। ऐसे ही महानुभावो ने मेरा उत्साह बढाया है और काफी अर्से से उनका प्रेमपूर्ण आग्रह रहा कि कुछ कविताओ के सकलन का प्रकाशन तो मुझे करवा ही देना चाहिये। मै उन सब महानुभावो, जिन्होने इस शुभ कार्य मे मेरा हौसला बढाया है अथवा कविताओ के सम्बन्ध मे सही सुझाव दिये है, के प्रति अपना आभार प्रगट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

विशेष रूप से:—

जयपुर—शासन सचिवालय

सर्व श्री:—

(१) चन्द्रभानु गुप्ता, उप शासन सचिव,
(२) राधेकान्त शर्मा, उप विकास आयुक्त, विकास विभाग,
(३) श्रीनाथ चतुर्वेदी, उप शासन सचिव,
(४) गौरीशकर गोस्वामी, उप शासन सचिव,
(५) मूलचन्द व्यास, अनुवादक, विधि विभाग,
(६) कमलाकर फड़के, अनुवादक, विधि विभाग,

जयपुर—अन्य

(१) हरिसिंह चौधरी, अध्यक्ष, राजस्थान नहर परियोजना
(२) माणकलाल कानूगो, सहायक मुख्य निर्वाचन अधिकारी,
(३) एम०एल०मोलकी, प्रिन्सिपल, राजकीय कालेज, कालाडेरा
(४) डा० जवरसिंह, लेक्चरार, राजस्थान विश्वविद्यालय,
(५) छत्रपति सिंह, सहायक निदेशक, जन-सम्पर्क निदेशालय,
(६) शिशोदिया सुल्तानसिंह, प्रसार अधिकारी, परिवार नियोजन, आकाशवाणी,





(७) नाथूसिह राठौड, सहायक ब्रान्च मैनेजर जीवन बीमा निगम, मिरजा इस्माइल रोड,

(८) एम०एल० राठौड, ए०जी० आफिस,

जोधपुर

(१) एम०एल० महेचा, रिटायर्ड एडीश्नल कमिश्नर,

(२) डा० कर्णसिह पंवार, प्रोफेसर, जोधपुर विश्वविद्यालय,

(३) डा० श्यामसिह तवर, लैक्चरार, राजकीय कालेज, जालौर,

(४) जीवन सिह महेचा, अतिरिक्त मजिस्ट्रेट, पाली,

बीकानेर

(१) मोहम्मद उस्मान आरिफ, मेम्बर, राज्य सभा,

(२) विपिनबिहारी माथुर, ट्रेजरी आफीसर,

(३) सुरपति सिह, एडवोकेट,

(४) पूनमचद खड़गावत, एडवोकेट,

(५) किशोरीवल्लभ गोस्वामी, एडमिनिस्ट्रेटर, परिवार नियोजन,

(६) सावल राम गुप्ता, सहायक पुस्तकाध्यक्ष, राजकीय पुस्तकालय,

(७) केसरी सिंह, टी०टी०ई० रतनगढ,

कोटा

(१) डा० फतेहसिंह, रिटायर्ड प्रिन्सिपल,

(२) डा० ब्रह्मदत्त शर्मा, अध्यक्ष, इतिहास विभाग, राजकीय कालेज,

अजमेर

(१) मोडसिंह गौड, कार्यालय अधीक्षक, रेलवे,

(२) सम्पतसिह गहलोत, अध्यापक राजकीय स्कूल,

(३) कानसिह निरवाण, स्टोर कीपर, राजस्थान रोडवेज,

(जयपुर)





सायरन

और

सजगता





अनुक्रमणिका











सायरन

सायरन बजते रहेंगे, सावधान
ग़ाफ़िल रहने का नहीं अब, प्रावधान !
याद रक्खो, हिन्द अब आज़ाद है !
भारत के ऐ नौजवानों, सावधान !







सायरन और सजगता

(१)

सायरन बजते रहेंगे, सावधान !
ग़ाफ़िल रहने का नहीं, अब प्रावधान !
याद रक्खो हिन्द, अब आज़ाद है !
भारत के ऐ नौजवानों, सावधान !

(२)

जागरण करना है तुमको, सावधान !
युग प्रहरी बनकर रहना, सावधान !
आज़ादी की रक्षा करनी है तुम्हें !
भारत के ऐ नौजवानों, सावधान !

(३)

धीरज रखना, तुमको रहना सावधान !
आशावादी बनकर रहना, सावधान !
जीवन में संघर्ष करना है तुम्हें !
भारत के ऐ नौजवानों, सावधान !







जय-जयकार है

—०—

[यह कविता, पाक फौजों के हथियार डालने के बाद, एव श्रीमती इन्दिरा गान्धी, प्रधान मंत्रीजी को भारत सरकार द्वारा "भारत रत्न" की उपाधि से सम्मानित करने के पश्चात्, जयपुर में माणक चौक चौपड पर नागरिक सुरक्षा समिति की ओर से आयोजित, विजय दिवस के उपलक्ष्य मे ता० २०-१२-७१ को सार्वजनिक सभा में पढी गई। स. मं.]

[१]

बंगला मुक्ति-वाहिनी,
सेना की जय-जयकार है,
आज हिन्दुस्तान की,
फौजों की जय-जयकार है,
उन शहीदों, वहादुरों को,
जो वतन पर मर मिटे,
मुक्त बंगला देश की,
"निर्वाण" जय-जयकार है।

[२]

जल की, थल की, नभ सेना की,
आज जय-जयकार है।
"भारत-रत्न" इन्दिरा गाँधी !
तेरी जय-जयकार है।
हिन्द-पाक का जंग जिसको
जीऽतने का श्रेय है,
ऐसी भारतवर्ष
जनता की जय-जयक



पुरानी और नई पीढ़ी

आज़ादी हासिल हुई
हमारी कुर्बानियों पर,
आज़ादी कायम रहेगी
तुम्हारी कुर्बानियों पर ।

बापू का व्यक्तित्व

एक सूरज
और
करोड़ों सूरजमुखी
जिधर घूमता था
उधर ही घूम जाते थे

बापू की रामायण

आजादी की अलख जगाई
आजादी की कसम दिलाई
भारत को आजाद कराया
आजादी को देख न पाया







धधकती आग ⁂

[यह कविता पहली बार ताः २२ अप्रैल १६७१ के दिन कवि सम्मेलन, जिसका आयोजन सर्व श्री ताराप्रकाश जोशी, वीर सक्सेना आदि के सयोजकत्व में, रामनिवास बाग, जयपुर मे बगला देश की सहायतार्थ किया गया था, में पढ़ी गई थी।

काव्य प्रेमियो का चौथे पद की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि जो विचार इसमे व्यक्त किये गये है, वे कितने सत्य के रूप मे प्रगट हुए है।

स. म.]

नाव कागज की कभी चलती नहीं
जुल्म की टहनी कभी फलती नही।

—: १ :—

तोप बंदूकें चलाकर देख लो
आस्माँ से आग बरसा देख लो
निहत्थो का खून करके देख लो
अबलाओ को भून करके देख लो
आजादी की लहर बम्मो से कभी रुकती नही
जो भभकती आग है वह आग से बुझती नही
नाव कागज की कभी चलती नही
जुल्म की टहनी कभी फलती नही

⁂ (१) दैनिक "लोक मत," बीकानेर १५-८-७१

(२) टाइम्स आफ राजस्थान, बीकानेर।
(स्वाधीनता), विशेपाक १५-८-७१

(३) फारवर्ड टाइम्स, जोधपुर (स्वाधीनता विशेपाक १६-८-७१) मे प्रकाशित।





—: २ :—

चगेज की सी खूं–रेजी कर देख लो
नादिरशाही जुल्म करके देखलो
हिटलर शाही बेरहमी कर देखलो
नेपोलियन की वह तवाही देखलो
कुर्बान होने वाले के अरमां कभी मिटते नहीं
कामयाबी के विना बहादुर कभी रुकते नहीं
नाव कागज की कभी चलती नही
जुल्म की टहनी कभी फलती नही।

—: ३ :—

मासूमों का खून करके देखलो
खूनी होली खेल करके देख लो
खून में हाथो को रंग कर देख लो
खून का तुम जाम पीकर देख लो
इकलावी जाग यह, तलवार से रुकती नही
हुब्वे वतन की आग तो वारुद से बुझती नही
नाव कागज की कभी चलती नही
जुल्म की टहनी कभी फलती नही





—: ४ :—

वागला के वाकुरो को दाद दो
आजादी के जग मे इमदाद दो
नई फसल ओ नई पौध मे खाद दो
जालिमो के बोरी बिस्तर वाध दो
आजादी के परवाने रफ्तार में रुकते नहीं
सर कटा सकते है लेकिन सर झुका सकते नही
नाव कागज की कभी चलती नही
जुल्म की टहनी कभी फलती नही







दृढ़ प्रतिज्ञ मुजीब ⁑

यह कविता, उस समय जब, सदर याह्या खां ने शेख मुजिबुर्रहमान को गिरफ्तार करके पश्चिमी पाकिस्तान मे अज्ञात स्थान पर ले जाकर मुकदमा चलाने का ढोंग रच रहे थे, लिखी गई थी। इसमे श्री मुजीब की उस समय की सकल्प की विचारधारा को कवि ने कल्पना मे व्यक्त किया है, वह सही उतरी है।

स० म०]

चाहे जितना जुल्म,
सितमगर ढ़हा लेगा
नर भक्षी बन करके जालिम
अपनी भूख मिटा लेगा
मासूमो का खून बहाकर,
खूनी प्यास बुझा लेगा
फौजी शासन मौत सजाए
मुझको भी दे डालेगा
मर जाना कटना है मुझको
झुकना है मजूर नहीं
ना पाकों से देश बांगला,
निश्चय मुक्ति पा लेगा।



⁑ १ कोहिनूर, बीकानेर, १७–८–७१ एव
२ साप्ताहिक गणराज्य, बीकानेर, अगस्त ७१, स्वाधीनता अङ्क, मे प्रकाशित।





धमकी का जवाब ❋

चुनौती

[सदर याहया खा साहिव ने भारत को युद्ध की धमकी देकर डराने की कोशिश की थी। यह कविता उस धमकी के जवाव मे लिखी गई थी। अतिम पक्तियो मे व्यक्त की गई कल्पना कितनी सत्य के रूप मे प्रगट हुई है, यह पाठक स्वय निर्णय करले।

स. म]

गीदड़ भभकी से कभी,
हम टलने वाले है नही
पिटने वाले टैंकों से,
हम हटने वाले हैं नही
जेटों पर नैटो की मार,
इतनी जल्दी भूल गये
थोड़ी सी जो फूंक भरो,
तो डब्बूजी तुम फूल गए
बदर घुडकी से कभी,
हम डरने वाले है नही
अबके तुमने सर उठाया,
अब समझलो सर नही।



❋ "वर्तमान्" साप्ताहिक बीकानेर, दिनाक १६-८-७१, मे प्रकाशित।





व्यापक प्रार्थना स्थल

गीत

[भारतवर्ष आदिकाल से ही सर्व शक्तिमान ईश्वर की शक्ति मे विश्वास रखने वाला आस्तिक एव धर्म प्रधान देश रहा है। यहाँ के धर्मग्रन्थो की चर्चा हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी मजहव का मानने वाला हो, की जुवान पर मिलेगी। ईश्वर चाहे साकार हो चाहे निराकार, लेकिन धर्माचार्यो ने तो उसे पूजा की चहार दीवारी मे बाध दिया। आज की वदलती हुई मान्यताओं में और जव मनुष्य को जीवनयापन की कठिनाइयो से फुरसत नही मिलती है तो उसके लिये यही उपाय है कि वह हृदय से आस्तिक वना रहे और जहाँ जव भी समय मिल सके, उस समय अपने तरीको से उसे स्मरण कर ले। प्रार्थना स्थल चहार दीवारियो मे सीमित नही है, व्यापक है। सायरन द्वारा कवि का यही सदेश है।

सं० म०]

[१]

वही कण कण में व्यापक है
वही घट घट मे व्यापक है
वही व्यापक है फूलो मे
वही व्यापक है शूलो मे
वही ससार मे व्यापक
वही मझधार मे व्यापक
वही व्यापक गगन में है
वही व्यापक मगन मे है
तो सुमिरन उसका हम करले
कि मन के मदिर मे धर ले
कि प्रार्थना "निर्वाण" जभी चाहे जहाँ कर ले।





[२]

कि रेगिस्तान जगल मे
कि मरु उद्यान मगल मे
कि ओटा पाटा चवल मे
कि शीत के सीमित सवल मे
खिजाओ मे वहारो मे
कि वर्षा की फुहारो मे
फलक के चाँद तारो मे
अजी सीमा सितारो मे
कि दर्शन उसका हम कर ले
कि मन के मंदिर मे धर ले
कि प्रार्थना "निर्वाण" जभी चाहे जहा कर ले ।

[३]

दीन दुखियो की आहो मे
प्रेम से मिलती वाहो मे
झोपड़ी, भोले गावो मे
कि नन्हो की निगाहो मे
कटीली जीवन राहो मे
समन्दर की अथाहो मे
अजता की गुफाओ मे
कि हिमगिरी की शिखाओ में
कि दर्शन उसका हम कर ले
कि मन के मंदिर मे धर ले
कि प्रार्थना "निर्वाण" जभी चाहे जहा कर ले ।





[४]

नही हम मंदिरो मे हो
नही गिरजा घरो मे हो।
नही मस्जिद मे बैठे हों
नही गुरुद्वारे बैठे हो।
न हो ऋषिकेष तपोवन मे
न हो वृन्दावन मधुवन मे।
न हो मथुरा के कुजन मे
न यमुना तीर निकुजन मे।
तो भी सुमिरन हम कर ले
कि मन के मदिर मे धर ले।
कि प्रार्थना "निर्वाण" जभी चाहे जहां कर ले।

[५]

वही है राज घराने में
वही है हर वीराने में
कि कोयल कुहू-कुहू गाने में
कि मीठे बोल सुनाने मे
हवा के झूलते पुल में
गुले-गुलज़ार गुलगुल मे
चहकती उड़ती बुलबुल मे
चमन की चुस्त चुल-बुल मे
अजी दीदार हम कर ले
कि मन के मदिर में धर ले
कि प्रार्थना "निर्वाण" जभी चाहे जहा कर लें।







*सदर याहया खां

को

हिदायत

(तरन्नुम के साथ)

[यह कविता भारत-पाक-तनाव के दौरान मे, भारत-रूस-मैत्री सन्धि होने के पश्चात लिखी गई थी। भारत की सुदृढ सैनिक् एव जनता की शक्ति तथा रूसी सहयोग एव सहायता के ग्रहसास के बल पर कवि ने यह कविता, एव विशेषत' अन्तिम दोनो पद लिखे है।

भारतीय जवानो एव जनता ने कवि की कल्पना को साकार बनाया है। अतएव वे वधाई के पात्र है।

स०म०]

—: १ —

मै वतन के वास्ते, हूँ यह वतन मेरे लिए
जिन्दादिली है हम ने सीखी, रखने इज्जत कौम की
आबरू जाने न देगे, हिन्द की इस भौम की
उ गली उठाई इस तरफ तो काट दू गा हाथ को
आखे उठाई इस तरफ, तो काट दू गा माथ को
हम तो ही पैदा हुए, मुल्के हिफाजत के लिए
मै वतन के वास्ते हूँ, यह वतन मेरे लिए

— २ .—

जो पराई फू क से बजते, वे होते वज्र मूर्ख
काला पोला रंग भी, दिखलाई देता उनको सुर्ख
आख मे यह मर्ज होता, मेडिकल का यह उसूल
लाइलाजी मर्ज कहते, अल्ला ताला ओ रसूल
हम तो चुप बैठे हैं बस, तेरी भलाई के लिए
मै वतन के वास्ते हूँ यह वतन मेरे लिए

* टाइम्स आफ राजस्थान, बीकानेर, दिनाक ६–१०–७१, मे प्रकाशित



—: ३ :—

म जानता हूँ तुझ को, मेरे मुल्क से ही रश्क है
हर कौम को गुमराह करना, ही तो तेरा इश्क है
आजाद बगला देश का, हर मुल्क मे अब नाम है
और हम को तू तो मुफ्त मे ही, कर रहा बद–नाम है
मेरा वतन गुल्जार है, मेरे लिए सब के लिए
मै वतन के वास्ते हूँ, यह वतन मेरे लिए

—: ४ :—

जुल्म की तलवार पर मज़हब कभी टिकते नही
ओ रिश्वती कलदार पर मज़हब कभी बिकते नही
यह खून की नदिया बहाने से, कभी रुकती नही
आजाद होने की तमन्ना, तो कभी बुझती नही
रे ! अक्ल तेरी खो गई क्या घास चरने के लिए
मै वतन के वास्ते हूँ यह वतन मेरे लिए

—: ५ :—

यह किल्लते हर रोज की, लगती मुझे अच्छी नही
तोह–मत लगाना नित नई, यह आदतें अच्छी नही
अब भी सभल जाये तो, समझो इसमे तेरी खैर है
वरना पचर ही करेगे हम तो काटे कैर हैं
जाँ निसारो जानते है, सर हथेला पर लिए
मै वतन के वास्ते हूँ, यह वतन मेरे लिए





—: ६ :—

ग़र तुझे लडना ही है, तो लड़ले मुझ से एक बार
और तबियत खोल कर, तू काढले दिल के गुबार
अबके तू उलझा है हमसे, अब तबाह हो जायेगा
आज दो की बात है, कल चार मे बट जायेगा
रे ! क्यो खड़ा कंगार पर, बे-मौत मरने के लिए
मैं वतन के वास्ते, हूँ यह वतन मेरे लिए

— ७ —

खून इतना गर्म है कि, गोलियाँ गल जायेगी
ग़र लगी मेरे वतन पर, व्यर्थ ही सब जायेगी
तीरो तबर तलवार, जब यह वज्र से टकरायेंगे
यह जेट पेटनटैंक सारे, धूल मे मिल जायेगे
यहा हर जवा तैय्यार है, तुझ से निपटने के लिए
मैं वतन के वास्ते हूँ, यह वतन मेरे लिए





इतिहास बोलता है

(१)

ऐसा जल जला तूफान
इंगलिस्तान में आया
कि ब्रिटिश फौज़ ने था
जगे आजादी का चलाया
कौम की खातिर था
दरिया खूँ का बहाया
कौमे खातिर शाह को
फाँसी पै लटकाया
वैसा ही मौक़ा जबकि
बंगला देश मे आया
तो मुक्तिवाहिनी ने
जगे आजादी का चलाया
आजाद बगला देश की
जब ध्यान मे आया
कि निर्दोष बगलादेश
को था किसने सताया
किसने बंगला देश का
था खून बहाया
तो ए मलिक पर ठीक
मुकदमा है चलाया।



(२)

गद्य–कविता

गीदड़ की जब मौत आती है,
तो हक्का बक्का होकर
गांव की तरफ दौडता है
जब विनाश की सवारी आती है,
तो दिमाग का एन्जिन
रेल की पटरी को छोडता है
स्पेन का अजेय जहाजी आरमेडा,
और नेपोलियन का रूस पर हमला
इसके जीते जागते सबूत है
हिन्द के हमले से पस्त हिम्मत,
मेजर जनरल भी, अपनी जान
बचाने के लिए, मैदाने जग से,
पजामे को हाथ मे लेकर दौडता है
ढाका में पाक फोजों के
हथियार डाल देने के बाद भी,
अपनी करारी हार से झुझलाकर
जनरल याहया खां
खेत और खलिहानो में
जंग चालू रखने के लिये
रेडियो पर ऐलान करता है







शायरों पर शेर

केन्द्र बिन्दु काका हाथरसी

[काका हाथरसी की सेवा मे यह कविता अभिनन्दन के रूप मे १५-८-७१ (गणतन्त्र दिवस) के दिन भेज दी गई थी। उन्होने अपनी प्रशस्ति मे लिखी गई कविता का उत्तर भिजवाया, जिसका प्रारम्भिक अंश जो कवि को स्मरण है प्रकाशित किया जाता है —

"कविता तुम्हारी मिल गई भूरसिह निर्वाण !
अपनी प्रशस्ति पढ़ करके प्राण हुए बलवान"

स० म०]

[१]

शायरो पर शेर घड दे
चाहे शायर न भी हो
और अगर महफिल में पढ़ दे
शायर ही कहलायेगा ।

[२]

उस्ताद ने यह गुर बताया
मैंने भी कुछ लिख दिया
मेहरबानी करके थोडा
आप भी सुन लीजिए ।

[३]

तेऽरी सूरत देख कर
काका ! हसी आती मुझे
क्यों पढ़ूँ तेऽरो कितावें
शार्ट कट मेऽथड है ।





[४]

इसलिए तो तेऽरी फोटू
मैंऽने घर में टाँग ली
इक नजर दीदार कर
खुल करके हस लेता हूँ मैं ।

[५]

तू तो क्या हंसता है काका !
तेरी दाढ़ी हसती रोज
तेरी दाढी में भी काका !
हसने की तासीर है ।

[६]

यू० एन० ओ० के सग्रहालय मे
तेरी दाढ़ी रखवा दु गा
तेरी ओ तेरी दाढी को
यादगार बन जायेंगो ।

[७]

दुनिया भर की वडी ताकतें
आपस में लड़ती है रोज
तेरी तो, दाढी के काका !
वे दीऽदार करने आयेंगी ।

[८]

इसलिए मैं कहता हूँ कि:—

इन्द्रा ने दो आंखे दे दी
तू इक दाढी दान कर
प्रलय काल तक तेरी दाढ़ी
कायम ही रह जायगी ।





जागरण

जागरण करना है तुमको, सावधान !
युग-प्रहरी बनकर रहना, सावधान !
आज़ादी की रक्षा करनी है तुम्हें !
भारत के ऐ नौजवानों, सावधान !







सम्बोधन ❋

[यह कविता—श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधान मन्त्रीजी की सेवा मे २६ जनवरी, १६७१ को प्रेषित कर दी गई थी। कवि को प्रत्युत्तर के रूप मे धन्यवाद का पत्र प्राप्त हुआ। हाल के युद्ध मे भारतीय विजय के फलस्वरुप इसमे "गुरुओ" एव "राजनीति के" शब्दो के स्थान पर "मुल्कों और "कूटनीति के" शब्द डाल कर चारचॉद लगा कर सामयिक बना दिया है। इस सूझबूझ के लिए कवि धन्यवाद के पात्र है —स० मं०]

इन्दिरा जी से

मोती और जवाहर इन्दिरा! अनुपम चॉद सितारे है,
अंधकार मे राह प्रदर्शक गगन-मण्डली तारे है ॥१॥
राजनीति मे नीति-निपुण तू, मोती की तू पोती है
वक्त बुहाई कर देती है, उपजै माणक मोती है ॥२॥

नेहरूजी से

दाद उसकी अक्ल पर है, जोश पर ओ होश पर
सियासी घुड-दौड में, मुल्को को पीऽछे रख दिया ॥३॥
तुझ से ज्यादह नेहरू! तेरी बेऽटी ऊपर नाज है
कि कूटनीति के बहादुरो का, फाश पर्दा कर दिया ॥४॥

जनता से (पैरोडी)

उसकी बेटीऽ ने, दुनिया उठा रक्खी है सर पर
खैरियत गुजरी, कि नेहरू के बेटा न हुआ ॥५॥

मान्यता

बागला को मान्यता दे दी गई,
इन्दिरा जी ने बात करदी, यह नई
दुश्मनो के दोस्त तो चकरा गये,
दुश्मनों की अक्कल चक्कर खा गई।



❋स्वाधीन भारत गाधी–शताब्दि अक, बीकानेर १२-२-७१ मे प्रकाशित।





उद्बोधन

[यह कविता काश्मीर के ऊपर आक्रमण हुआ तब सैनिक शिक्षा को मद्दे नज़र रखते हुए लिखी गई थी । इसमे यथा स्थान सामयिक परिवर्तन किये गये है । तब से अब तक यद्यपि औद्योगिक, वैज्ञानिक, सैनिक शिक्षा मे बहुत कुछ विकास एव बढोत्तरी हुई है, परन्तु परिवर्तित (बदलती) हुई परिस्थितियो मे भी कवि इन सब को अपर्याप्त मानता है । स्वतन्त्र भारत पर कई मुल्को की आँखे लगी हुई है । इतना ही इशारा काफी है ।

आज भी यह कविता जागृत भारत की जनता के लिए चुनौती के रूप मे, एव सरकार के लिए सुझाव के रूप मे अपना महत्व रखती है ।

स० म०]

[१]

पश्चिम की शिक्षा मे रगकर
उसी सभ्यता को अपनाया ।
भारत के अतीत गौरव को
है हमने इकबार भुलाया ।।

[२]

खान पान ओ रहन–सहन मे
पश्चिम को आदर्श बनाया ।
अवगुण हमने ग्रहण किये वहु
सद्गुण को धत्ता बतलाया ।।

[३]

सीखा हमने फैशन उनसे
दाढी ओ मूछे मुंडवाना ।
गुटर गुटर गू बातें करना
अकड अकड इठला कर चलना ।।

[४]

वर्तमान वैज्ञानिक शिक्षा
से भी कोसो दूर पड़े है ।
जगत शिखर पर पहुँच रहा है
हम न अभी सौ कदम बढे हैं ।।

[५]

औद्योगिक शिक्षा पर देखो
अभी न पूरा ध्यान दिया है ।
सैनिक शिक्षा का भी देखो
अभी न पूरा मान किया है ।।





[६]

यह है स्वतन्त्र भारत बंधु !
इस पर जब-तब हमले होगे ।
मानव जीवन के विध्वसक
टन-टन के गोले बरसेगे ॥

[७]

देखो पश्चिम दरवाजे पर
दुश्मन आज खटा खट करता ।
और वहा उत्तर मे देखो
काश्मोर का द्वार धधकता ॥

[८]

हिन्द पूर्वी सीमा ऊपर
अब भी खतरा बना हुआ है ।
हिन्द पश्चिमी दरवाजे पर
अब भी दुश्मन तना हुआ है ॥

इसलिए हम कहते है कि:—

[९]

जीवन की आवश्यक सैनिक
शिक्षा की शालाये खोलो ।
भारत के बच्चे-बच्चे को
सैनिक शिक्षा ही से मोलो ॥

[१०]

राइफल बम बारुद बनावे
वायुयान मे उडकर जावे ।
यान्त्रिक आविष्कार करे अरु
तान्त्रिक विद्या को अपनावे ॥

[११]

वायुयान निर्माण करे अरु
विमान भेदी तोप बनावे ।
मिराज फेन्टम ववारो को
मिग, हटर से मार गिरावे ॥

[१२]

भारत भू–रक्षा हित ऐसी
सुसज्जित सेनाये होवे ।
राष्ट्र जाति उद्धार कर सके
विश्व–समर मे विजयी होवे ॥







रण—कंकण

[राखी, बहने केवल अपने भाइयो के ही बाँधती है, लेकिन रण-ककण माता अपने पुत्र के, पत्नी अपने पति के और बहन अपने भाई के, आरती उतारती हुई, मस्तक पर विजय का तिलक लगाती हुई दांये हाथ की कलाई पर बाधती है।

रण-ककण वाधते हुए देश रक्षा की भावनाओ से ओतप्रोत करती हुई, मातृभूमि की रक्षा के हित देश पर वलिदान होने की प्रेरणा देती हुई, रण प्रयाण के लिए हसते-हसते विदा करती है।

वीर भूमि राजस्थान मे इस प्रथा की विशेष रूप से परिपाटी रही है। स्वतन्त्र भारत की रक्षा के लिए २५ वर्षों मे ४ युद्ध हुए है उनमे इस आदर्श-पूर्ण परम्परा को पूर्ण रूप से निभाया गया है।

स० मं०]

(१)

साज विजय की कुंकुम रोली
भर कर राष्ट्र भाव की झोली।
आती माता वधुएं भोली
ककण ले वहनो की टोली॥

(२)

कंकण के वे वचन लाती
कंकण वाध अमर कर जाती।
स्वतन्त्र युग के पाठ पढाती
वीरोचित यशगान सुनाती॥





(३)

आओ प्यारे वीरो आओ
देश धरम पर वलि वलि जाओ ।
सीमा की रक्षा करने को
मर कर आज अमर हो जाओ ॥

(४)

देश प्रेम के दीवाने वन
देश जाति पर बलि हो जाओ ।
मातृ भूमि के परवाने वन
निज प्राणो की भेट चढाओ ॥

(५)

पीछे पीछे हम भी आती
आगे आगे वढते जाओ ।
नही पडी पीछे रह जावे
हमको भी वह मार्ग दिखाओ ॥

(६)

हिन्द निवासी वहने भाई
सीमा रक्षा सभी करेंगे ।
राष्ट्र जाति अरु मातृभूमि के
ऋण से होकर उऋण मरेंगे ॥

(७)

दुश्मन के आते जेटो को
नेटो से वम मार गिराओ ।
हथगोलों से हमला करके
पिटन टैंक वेकार वनाओ ॥





(८)

फन्टमिराजो बम्बारो को
मिग हटर से आग लगाओ।
दन दन करती तोपो ऊपर
अजी दनादन बम बरसाओ॥

(९)

सीमा मे गर घुसे पैठिये
सीधे ही यमलोक पठाओ।
छतरी से उतरे सैनिक तो
कमर तोड़ थाने पहुँचाओ॥

(१०)

राडारो मे आग लगाकर
धूल धूसरित करते जाओ।
पिल वाक्सो को तहस-नहस
कर शत्रु सैन्य को मार भगाओ॥

(११)

बधन युत् कश्मीर भाग को
दुश्मन से चिर मुक्त कराओ।
अतुल शौर्य वीरत्व दिखाकर
मा के सच्चे लाल कहावो॥

(१२)

निर्दोषी जनता का देखो
कभी न प्यारे! खून बहाना।
हास्पिटल गर मिले राह मे
हाथ जोड आगे बढ जाना॥





(१३)

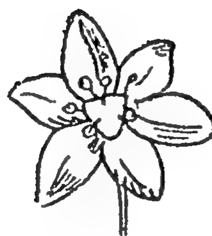
मस्जिद गिरजा जेलों ऊपर
कभी न प्यारे बम बरसाना।
संकट की इन घडियो में भी
आदर्शों की आन निभाना॥

(१४)

भारत के वीरो अब ऐसा
आज विजय त्यौहार मनाओ।
सगीनो की नोको पर तुम
नव भारत इतिहास बनाओ॥

(१५)

शोणित की नदियो मे नहाकर
विजय नाद करते घर आओ।
मातृ भूमि की रक्षा के हित
रण-ककरण यह सफल बनाओ॥







ठूंठों वाले देश

[राजस्थान का अधिकतर भाग रेगिस्तानी होने के कारण, यहां हरियाली और हरे वृक्षो की कमी है। खेजडी,जाटी, कैर,कटीली झाडिया ही वहुतायत मे पाई जाती है। इन्ही कटीले वृक्षो में सहन-शक्ति अधिक मात्रा मे होती है। पानी बहुत कम मिलता है। ओले, पाले, तूफानो में भी यह वृक्ष गर्व से ऊंचा मस्तक किए हुए अपना अस्तित्व वरकरार रखते है। इसलिए कवि ने राजस्थान के वृक्षो को 'ठूंठ" ही कहा है।

उत्प्रेक्षा के रूप मे यह ठूंठ राजस्थानी वीरों के प्रतीक है, जिनकी अद्वितीय वीरता की कहानियाँ इतिहास के स्वर्ण अक्षरो मे लिखी हुई है और इस युग मे भी रणवाँकुरो ने अपने वीरत्व के इतिहास मे हिन्द-पाक सग्राम मे अमरता की अमिट छाप लगाई है।

स० म०]

हे ठूंठों वाले देश जाग

(१)

तेरे ठूंठो की आग जगे
मेरे भारत के भाग जगे
सारे तपके यों मिल जाये
जैसे हों मा के पुत्र सगे
छूटे अनुचित सव रग-राग
हे ठूंठो वाले देश जाग!

(२)

जालिम ने एक कुल्हाड़ा ले
पत्ते तोड़े, तोड़े डाले
पर ठूंठो की मजवूती से
उसके हाथो पड़ गए छाले
वह गया छोड़ मैदान भाग
हे ठूंठो वाले देश जाग!





(३)

तेरे ठूठों मे मान भरा
अरमान भरा अभिमान भरा
फूलो पत्तो और टहनो को
जिनमे था सुख सामान भरा
अपने पन मे कुछ दिये त्याग
हे ठूंठो वाले देश जाग !

(४)

ठूठों की शौर्य्य कहानी में
है यू इतिहासिक गान छिपा
चित्तौडी खडहर महलो मे
ज्यो पद्मिनी का बलिदान छिपा
बरबाद हुआ कुछ सब्ज़ बाग
हे ठूंठो वाले देश जाग !

(५)

तूफानी कुटिल कुचालो मे
ओले पाले भूचालो मे
फिर भी यह ठूंठ अटूट रहे
है इनकी जड़ पातालों मे
कीली ज्यों मस्तक शेष नाग
हे ठूंठो वाले देश जाग !





(७)

तिस पर भी आज खडे यहा पर
देखो ऊंचा मस्तक आकर
सीमा की रक्षा करने को
मानो अद्भुत वल पा पाकर
गाते जाते कुछ प्रलय राग
हे ठूठो वाले देश जाग !

(८)

भूखे नगे हम रह लेगे
गर्मी सर्दी को सह लेगे
खा लेगे रोटी चटनी से
जगल मे मगल कर लेगे
गर नही मिलेगा दाल साग
हे ठूठो वाले देश जाग !

(६)

पृथ्वी पाताल हिला देगे
जालिम का जुल्म मिटा देगे
प्राणों को आज हथेली रख
हम दुनिया को दिखला देगे
कैसे खेले शोणित से फाग
हे ठूठो वाले देश जाग !







भारतीय नारी के प्रति

कर मे ककरण बाध हमारे,
भाल विजय का तिलक लगा दे।
देश जाति अरु आन मान पर,
मर मिटने का जोश जगा दे ॥१॥
आजादी की ओ दीवानी!
स्वतन्त्रता की अहो पुजारिन!
जुध से भागे पतियो को,
तू शिक्षा देने-हारी सुहागिन ॥२॥
तू सोई है अरे सहोदरे!
तुझको सोये सदियाँ वीती
काया जग की पलट चुकी है,
तो भी तो तू है नही चेती ॥३॥
अब भी जग ओ युग-द्रष्टा वन,
महा-क्राति की आग लगा दे।
भूख प्यास से पीडित तिरषित,
प्राणो का उद्धार करा दे ॥४॥
अगर नही, तूफान भयकर,
झोको को जो निशि दिन सहते
ऐसे टिमटिम करते प्राणी,
दीपों का "निर्वाण" करा दे ॥५॥
कर में ककरण बांध हमारे,
भाल विजय का तिलक लगा दे।
देश जाति अरु आन मान पर,
मर मिटने का जोश जगा दे ॥६॥







राष्ट्र के नौनिहाल के प्रति ❋

आँधी सा आगे बढता जा।
गाँधी सा रण मे लड़ता जा ।।

[१]

क्यो यहा पर तू है पड़ा हुआ
रे अरे व्यर्थ में अड़ा हुआ
ओ, जग कहा पर है खडा हुआ
इसमें क्या तू पाता है मजा
आंधी सा आगे बढता जा।
गांधी सा रण मे लड़ता जा ।।

[२]

तूफानो की परवाह नही
तेरा विश्वास न जाय कही
जीवन की बजती वीणा ही से
जीवन झंकृत करता जा
आधी सा आगे बढता जा ।
गाधी सा रण मे लड़ता जा ।।

[३]

सघर्षो की चौपट्टी मे
जीवन की जलती भट्टी मे
सासारिक चलती घट्टी मे
पिस-गलकर कुछ ढलता जा
आंधी सा आगे बढता जा।
गाधी सा रण मे लड़ता जा ।।

[४]

कहते है वे सब निगम अगम
चाहे पथ हो तेरा दुर्गम
फिर भी गाता जाता सरगम
ऊंचे परवत पर चढता जा
आँधी सा आगे बढता जा।
गांधी सा रण मे लड़ता जा ।।

[५]

फिर ईश-भरोसा साथ लिये
सिर बांध मुंडासा हाथ लिये
कष्टो को सहते नित्य नये
टकराता गिरता उठता जा
आधी सा आगे बढता जा।
गाधी सा रण मे लडता जा ।।

❋ साप्ताहिक लोक जीवन, जोधपुर,
गणतन्त्र दिवस, विशेपाक, २३ जनवरी, १९७० मे प्रकाशित





[६]

होकर रक्षित जुधसाजों मे
रण के बजते सब बाजों मे
बम तोपो की आवाजो मे
निर्भय होकर तू लड़ता जा
आधी सा आगे बढता जा ।
गाँधी सा रण मे लडता जा ॥

[७]

अपने गौरव के आनो पर
निज देश जाति सन्मानो पर
तप त्याग और बलिदानो पर
कुछ बनता और बिगडता जा
आँधो सा आगे बढता जा ।
गाधी सा रण मे लड़ता जा ॥

[८]

विषधर भुजग ग़र मिल जाये
गरजते शेर बवर चाहे
ओले आधी पानी आये
तूफानी दौरा करता जा
आँधो सा आगे बढ़ता जा ।
गाधी सा रण मे लडता जा ॥

[९]

वीरो का व्रत ही आजीवन
है शूर-वीरता सजीवन
वीरो का मरना ही जीवन
यह मंत्र जाप तू जपता जा
आधी सा आगे बढता जा ।
गांधी सा रण मे लड़ता जा ॥

[१०]

जग सेवा व्रत को अपना कर
ओ रूढिवाद को ठुकरा कर
तद्रित भारत को जागृत कर
आदर्श उपस्थित करता जा
आँघी सा आगे वढ़ता जा ।
गांधी सा रण मे लडता जा ॥

[११]

तव पथ काटे फूल वनेंगे
कष्ट सभी सुख-मूल वनेंगे
दुश्मन भी अनुकूल वनेंगे
मार्ग प्रदर्शन करता जा
आंधी सा आगे वढ़ता जा ।
गाँधी सा रण मे लड़ता जा ॥







ताशकन्द

[१]

उपालम्भ

(शास्त्रीजी का जनरल अय्यूब को)

फरिश्ते
बनने चले थे
हैवान बन गये
शराफत को छोडकर
शैतान बन गये
तेरे जुल्मो का
नतीजा
यह है जालिम
कि लहलहाते खेत
रेगिस्तान बन गये
कि मस्जिद गिरजा
जेल
कब्रिस्तान बन गये
कि आबाद कस्बे गाँव
उजडिस्तान बन गये।

[२]

दर्द-भरी दास्ताँ

बुलाया था अगर
जो आपको
कुछ ठहर कर जाते
जाना जरूरी था
अगर, कुछ
बोल कर जाते
दिल मे खटक,
यह रह गई कि
क्या पैगाम था ?
शास्त्री जी ! दर्द-
भरी इस दास्ता
से मुक्त कर जाते।







मेरा प्यारा वेश

अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश, दुलारा वेश

(१)

कोट पैंट नकटाई वाला
दाढी मूंछ मुड़ाई वाला
पाउडर क्रीम मलाई वाला
नाजुक नरम कलाई वाला
अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश, दुलारा वेश

(२)

लैटेस्ट फैशन के बालो वाला
पिचके पिचके गालो वाला
बटन बक्सवे तालो वाला
तग बूट से छालों वाला
अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश, दुलारा वेश

(३)

टेढी गरदन करने वाला
मद से जल्दी भरने वाला
लचक चाल से चलने वाला
हो अमचूर अकडने वाला
अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश, दुलारा वेश





(४)

कमती आमद लाने वाला।
कर्ज़ा बोझ लदाने वाला
ज्यादा खर्चा खाने वाला
तानो को सुनवाने वाला
अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश, दुलारा वेश

(५)

निज औकात भुलाने वाला
थोथा रोब जमाने वाला
भोले भाले भायों को, जो
डर से दूर भगाने वाला
अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश, दुलारा वेश

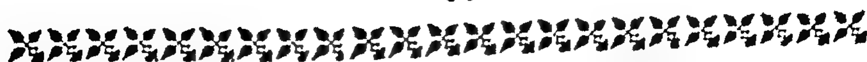
(६)

सोशलिज्म को लाने वाला
सबको साहब कहाने वाला
सूर्य चंद्र से हमे हटा कर
तारों मे चमकाने वाला
अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश, दुलारा वेश

(७)

टेढा टोप लगाने वाला
साफे को सटकाने वाला
आगे वढ़कर प्रेसिडेन्ट से
हैंड–शेक करवाने वाला
आजाद हिन्द मे प्यारा वेश
प्यारा वेश, दुलारा वेश







धैर्य-धारण

धीरज रखना, तुमको रहना सावधान !
आशावादी बनकर रहना, सावधान !
जीवन में संघर्ष करना है तुम्हें !
भारत के ऐ नौजवानों, सावधान !







राष्ट्र–निष्ठा ❈

गीत

चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आज़ाऽदी रहे।

(१)

मेरी जमुना रहे, मेरी गंगा रहे
यह तिरंगा रहे, मन चगा रहे
लहराता रहे, फहराता रहे
इठलाता रहे, बल खाता रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आज़ाऽदी रहे।

(२)

नौजवानों की टोली, यहाँ बढती रहे
दुश्मन सीने पे छाती पे, चढती रहे
मेरी कुर्बानियाँ, लासानी रहें
मेरे मस्तक पर दुर्गा भवानी रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आज़ाऽदो रहे।

❈ साप्ताहिक फारवर्ड टाइम्स, जोधपुर, दीपावली विशेषांक, १९७१, पृष्ठ २१ मे प्रकाशित।





(३)

मेरे वेऽद रहें, ये पुराण रहें
मेरी इंजिल और कुरान रहें
सब धर्मों के सारे ग्रन्थ रहें
सारे मजहब, सब पन्थ रहें
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजाऽदी रहे।

(४)

चाहे कितनी, यह दुनियाँ बदलती रहे
आँखे मूँदी रहे, झाऽसे देतो रहे
इन्सानों की दुनियां मे इन्सां रहें
मेरे भारत में हिन्दू मुसल्मां रहें
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजाऽदी रहे।

(५)

चाहे कितना ही रग, वे बदलते रहे
कुछ भी कहते रहे, कुछ भो सुनते रहें
ईमानों की दुनियां में ईमां रहें
ईमानों पे मिटने के अरमां रहें
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजाऽदी रहे।





(६)

मेरे जीवन में जोशे-जवानी रहे
मेरी आँखों में मोहब्बत का पानी रहे
मस्ती भरी मेऽरी होली रहे
जगमगाती हुई, यह दिवाली रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजादी रहे ।

(७)

मेरे बैल रहें, यह किसान रहें
मेरे खेत और खलियान रहें
मेरे खेतों में वर्षा बरसती रहे
मेरे बादल में बिजली चमकती रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहे,
मेरा भारत रहे, आजाऽदी रहे ।

(८)

मेरा गुलशन रहे, मेरा मालीऽ रहे
लहलहाती हुई हरियालीऽ रहे
मुस्कराती हुई खुश-हाली रहे
मेरा भारत सदा बल-शाली रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजाऽदी रहे ।





(९)

मेरे गुलशन में कोयल कुहुकती रहे
मेरे बागों में तितली फुदकती रहे
दहीऽ दूध की नदियां बहती रहे
मेरे भारत की, खुशबू महकती रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आज़ाऽदी रहे।

(१०)

मेरी माता का सर यह, सलामत रहे
मेरी माताओं बहनों की इज्जत रहे
लग जाये, तो जीवन की बाजी रहे
मेहमां आये तो मेहमाँ-नवाजी रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आज़ाऽदी रहे।







अनुभूतियां

कौन चकनाचूर होता ?

[१]

कौन चकनाचूर होता ?
जो नशे मे चूर होता।
अकड कर अमचूर होता,
इसानियत से दूर होता।
क्रोध से भरपूर होता,
क्रूरता मे शूर होता ।
दुनिया का दस्तूर होता,
वोही चकनाचूर होता।

उर्ध्व-मुखी

[२]

(गद्य कविता)

बादलो को आये देख
घडे फोड़ देते है
सोफासेट घर में देख
कुर्सी तोड़ देते है
बिजली से जलती बत्ती
लैम्प तोड देते हैं
विद्युत् से चलते पंखे
पखी मोड़ देते है
ऐसे उर्ध्व-मुखी
अपटूडेट महा-प्राणी
अपने पतन के इतिहास मे
एक नया पन्ना
और जोड़ देते है।







गीत

[१]

आशाओं के दीप मेरे,
न कभी यह बुझ सके हैं,
न कभी यह बुझ सकेंगे।
आशाओ के दीप मेरे,
जगमगाते ही रहे हैं,
जगमगाते ही रहेगे।
आशाओ के दीप मेरे !

[२]

आंधियो तूफान में यह,
जूझते रहते रहे हैं,
जूझते रहते रहेगे।
झंझावातों से सदा,
संघर्ष करते ही रहे,
सघर्ष करते ही रहेगे।
आशाओ के दीप मेरे !

[३]

वायु के ये तेज झोके,
आते जाते ही रहे हैं,
आते जाते ही रहेगे।
किन्तु जीवन दीप मेरे,
जागरण करते रहे हैं,
जागरण करते रहेगे।
आशाओं के दीप मेरे !



[४]

दीप्त जीवन दीप मेरे,
यह स्वय जलते रहे है,
यह स्वय जलते रहेगे।
किन्तु तम को चीर कर,
आलोक भरते हो रहे,
आलोक भरते ही रहेगे।
आशाओ के दीप मेरे !

[५]

अज्ञानरूपी घन तिमिर को,
ये भगाते ही रहे है,
ये भगाते ही रहेगे।
ज्ञान की नव ज्योति को,
सततः जगाते ही रहे,
सततः जगाते ही रहेगे ।
आशाओ के दीप मेरे !

[६]

त्याग तप की भावना को,
व्यक्त करते ही रहे हैं,
व्यक्त करते ही रहेगे।
त्याग तप की भावना को,
विश्व मे भरते रहे हैं,
विश्व मे भरते रहेगे ।
आशाओ के दीप मेरे !



[७]

नभ से जब ओले गिरे, तब,
भी तो यह जलते रहे है,
अब भी यह जलते रहेगे।
व्योम से शोले गिरे जब,
भी तो यह हँसते रहे है,
अब भी यह हँसते रहेगे।
आशाओ के दीप मेरे!

[८]

आफते आती रही, ये,
बाखुशी सहते रहे है,
बाख़ुशी सहते रहेंगे।
दीप्त जीवन दीप मेरे,
मुस्कुराते ही रहे है,
मुस्कुराते ही रहेगे।
आशाओ के दीप मेरे!







परिवार सीलिग ※

(गद्य कविता)

"परिवार सीलिग" पर मेरी कविता, शूगर-कोटेड पिल्स नही है,
मेरी कविता, कडवी औषध, कटू सत्य है, सही तथ्य है,
भारत के नवयुग के व्यक्ति, चाहे होवे नव-दम्पत्ति,
चाहे हो जनता सरकारे, सुन ले युग की नई पुकारे,
खा पीकर गुर जायेगे, सतति-हित मे, अपने हित में
सर्वोपरि देश के हित मे, वे सेवा कर जायेगे।

सौ बातों की बात है

[१]

भूतकाल के गाने छोडो
सारे सभी तराने छोड़ो
आगे सोचो, सुखी रहो
ये वर्तमान की बात है
सौ बातो की बात है।

[२]

करण उप-करण सब कुछ यहा पर
मदद करे सरकारी दपतर
जनता को तैयार करो तुम
सीधी सच्ची वात है
सौ बातो की वात है।

[३]

अनपढ जनता गुर ज़ाहिल है
गवर्नमेन्ट को यह लाज़िम है
सीलिग का कानून बना दे
ये काटे की वात है
सौ वातो की वात है।

[४]

सन्तति के आदेश निकालो
दम्पत्ति-अध्यादेश निकालो
ससद में है वहुमत अपना
क्या मुश्किल की वात है ?
सौ वातो की वात है।

※ "परिवार नियोजन" विपय पर, सम्वन्धित विभाग द्वारा आयोजित, कवि-सम्मेलन वीकानेर, अगस्त ७१ मे पढी गई।





प्यारी कहानी है ※

(सन् १९६२ के सदर्भ मे)

[१]

मेरा दोस्त चाऊ चीन,
कि मेरा दोस्त माऊ चीन,
कि मेरा मित्र पड़ौसी चीन,
बात यह, नही पुरानी है।
कि मेरे मित्र की प्यारी कहानी है ।।

[२]

कि उसने देश पे धावा बोल,
बताया आजादी का मोल,
कि आजादी घणी अनमोल,
कि आजादी हमारी राजरानी है।
कि मेरे मित्र की प्यारी कहानी है ।।

[३]

उसने, जगाया देश मे सबको,
सिखाया आप हम सबको,
कि किस तरहं, संगीन नोको पर,
यहां, चढती नौजवानी है।
कि मेरे मित्र की प्यारी कहानी है ।।

[४]

कि मेरा दोस्त चाऊ चीन,
कि मेरा दोस्त माऊ चीन,
कि मेरा मित्र पडौसी चीन,
बात यह, नही पुरानी है।
कि मेरे मित्र की प्यारी कहानी है ।।

※ यह कविता, चीन द्वारा भारत पर हमला किये जाने पर जयपुर मे माणकचौक, चौपड में आयोजित कवि सम्मेलन, मे पढी गई थी।





तूफान और संघर्ष

गीत

(१)

आंधी से सघर्ष कर रही
हर दरखत को हर टहनी
कि तूफानों से टकराती है
हर झाड़ी की हर टहनी
गर्मी सर्दी को भी सहती
कैर आक की हर टहनी
कि ओले पाले में भी ठरती
खेजडले की हर टहनी ।

(२)

आंधी में जो अड़ना जाने
तूफानों से लड़ना जाने
लुलना और लचकना जाने
दांव-पेच से बढना जाने
उसका ही अस्तित्व रहेगा
उसका ही व्यक्तित्व रहेगा
निश्चय जीत उसी की होगी
और सफलता पग चूमेगी

(३)

सबक सिखाती तुम हम सबको
हर दरख़त की हर टहनी
कि हर झाड़ी की हर टहनी
कि आकड़ले की हर टहनी
हर कूंचे की हर टहनी
कैर कटीली हर टहनी
कि खेजड़ले की हर टहनी





मधु-शाला

(१)

पूरा मोल चुकाने पर भी,
गर न मिले पूरी हाला,
साकी बन मालिक बैठा हो,
भेद-भाव से मतवाला,
किसी किसी को भर देता हो,
बाकी को खाली प्याला,
ऐसी मधुशाला से अच्छी,
तो है मेरी चट्शाला ।

(२)

नहीं शिकायत रहे किसी की,
हमें मिले पूरी हाला,
साक़ी वह, भरपूर पिलाकर,
करे प्रेम से मतवाला,
दीन धनो हिन्दू-मुस्लिम सब,
बन प्रेमी पीवें प्याला,
उन्नति करती बनी रहे,
आज़ाद-हिन्द की मधुशाला ।





(३)

अहो निरन्तर आगे बढ़ती,
हिन्दी है मेरी हाला,
आंगल-भाषा, उर्दु-फारसी,
का भी पी देखा प्याला,
व्हिस्कि, ब्रान्डी और विक्ट्री,
बना सकी नही मतवाला,
देशी का आनन्द मिला, जहाँ,
वह हिन्दी की मधुशाला ।

(४)

नित-नित जलते अरमानों की,
होली है मेरी हाला,
जिनको पीकर गम से मैं,
मन मार बैठता मतवाला,
थोड़ा-थोड़ा, नियमानुकूल,
श्रो घूंट-घूंट पीता प्याला,
आखिर तो वह धधक उठेगी,
मतवाले की मधुशाला ।







किस की कुर्सी ?

[बग-बंधु राष्ट्रपति श्री मुजीबुर्रहमान के पाकिस्तान से रिहा होकर पुन अपने स्वतन्त्र बंगला देश मे पहुँचने के पश्चात् अब इस कविता पर कोई टिप्पणी की आवश्यकता नही रह गई है ।

पाठक गण के समक्ष सारी तस्वीर उभर कर साफ सुथरी सामने आ चुकी है । —०— स०म०]

किस को कुर्सी काबिज कौन ?
बोल कवि क्यों साधे मौन !

[१]

किस की कुर्सी काबिज़ कौन ?
किस का डेरा काबिज़ कौन ?
किस की भूमि काबिज़ कौन ?
किसकी जनता काबिज कौन ?
बोल कवि, क्यों साधे मौन !
सोच समझ कवि रहता मौन ।

[२]

तेरी कुर्सी काबिज़ जालिम
तेरा डेरा काबिज़ ज़ालिम
तेरी भूमि, काबिज़ ज़ालिम
तू भोला है, वह है जालिम
भला अभी रहने में मौन !
सोच समझ कवि रहता मौन ।





[३]

तू, बाटो सेके कंडे से
वह सेके हथकण्डे से
सबको हाँके डण्डे से
साथ लिए मुसटण्डे से
चुप्पी साधे, रहजा मौन !
सोच समझ कवि, रहता मौन !

[४]

अभी नहीं कुछ मुँह से बोल !
बन्द पडा तरकस ना खोल !
नही बजा तू अपने ढोल !
अपने आप खुलेगी पोल
तभी तोड़ना अपना मौन !
सोच समझ कवि रहता मौन !

(५)

जब टाइम आयेगा तेरा
बजे जीत का डंका तेरा
तभी बंधेगा तेरे सेहरा
भूमी होगी, डेरा तेरा
तभी बदलना अपनी टोन !
सोच समझ कवि रहता मौन !





(६)

तेरी कुर्सी तुझे मिलेगी
तब फिर तेरी दाल गलेगी
तेरी नावे फेर चलेंगी
तेरी चुप्पी तभी फलेगी
तेरा होगा पूरा जोन !
सोच समझ कवि रहता मौन ।

(७)

किसको कुर्सी काबिज़ कौन ?
किसका डेरा काबिज़ कौन ?
किसकी भूमि, काबिज़ कौन ?
किसकी जनता काबिज़ कौन ?
बोल कवि, क्यों रहता मौन ।
सोच समझ कवि रहता मौन ।









जमाने के साथ बदलो

—०—

[गद्य कविता]

—०—

जमाना तेजी के साथ बदल रहा है,
जमाने के साथ बदलो,
वरना,
जमाना तुम को बदल देगा,
और
तुम्हारी हुकूमत का
पटिया गोल कर देगा !
और तुम,
गिरेबान में मुंह छिपा कर,
दुम दबा कर, जान बचा कर,
पूर्वी या पश्चिमी गोलार्द्ध के,
किसी देश में फरार हो जाओगे
और
अपने कुकृत्यों पर पश्चात्ताप,
एव
पापों का प्रायश्चित्त करते हुए,
हिटलर की तरह,
कही आत्म-घात करके मर जाओगे ।







पट-परिवर्तन

[१]

दुधारु धैन

भुट्टोजी बोलन लगे,
मीठे मीठे बैन ।
"लात खाय पुचकारिये,
होय दुधारु धैन" ॥
पिण्डी को अब चाहिए,
भिण्डी, चावल, धान ।
बंगला से अब कह रहे,
भूलो सब अपमान ॥

[२]

याहया जी कैद है तो,
शेखजी आजाद है ।
पाक का यह कैदखाना,
रहता जिन्दावाद है ॥







कलदार का चमत्कार

[१]

राम करे ऐसा हो जाये
एक नोट के दो बन जाये
दो नोटो के नौ बन जाये
नौ नोटों के सौ बन जाये
सौ के बस दो सौ बन जाये
दो सौ के नौ सौ बन जाये
नौ सौ के, नौ सौ हज्जार
हो जायेगा बेड़ा पार।

[२]

मात-पिता खुश हो जायेगे
भाई—बहन भगे आयेगे
काकी मामी जग जायेगी
लल्ला कह कर बुलवायेगी
पड़ौसिने दौड़ी आयेगी
डट कर के दावत खायेगी
घर में घी के दीप जलेगे
सब के मन के फूल खिलेंगे।





[३]

पत्नी के तो मजे रहेगे
पीहर-वाले, सजे रहेगे
ग्रमा-चौकड़ी जमी रहेगी
मेरे तो यह कमी रहेगी
अप-टू-डेट कहा से लाऊ
किस के सग घूमनें जाऊ
किसके सग सिनेमा जाऊ
होटल मे किसके सग खाऊं।

[४]

वातावरण बदल जायेगा
स्वर्ग धरा पर ग्रा जायेगा
मित्रो की तो खूब बनेगी
हरी-हरी बस रोज छनेगी
बाग बगीचे सैर करेंगे
सिनेमा, पग-फेर करेंगे
रोज रोज नौरोज चलेंगे
माल मलीदे रोज मिलेंगे।

[५]

बाजारो मे धाक् जमेगी
पत्रो मे तस्वीर छपेगी
रेस्ट्रा ग्रौर बार चलेगी
एम्बेसेडर कार चलेगी
मेरे ग्राका काल करेंगे
सस्पेन्शन से बहाल करेंगे
सभी मुकद्मे वापिस होंगे
मेरे बस मे ग्राफिस होंगे।



